Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

वैश्वीकरण और भारतीय शास्त्रीय संगीत (कला, कलाकार, कला की प्रस्तुति एवं शिक्षा पद्धति के संदर्भ में)

Dr. Kedar Mukadam[1], Prof. Gaurang Bhavsar[2], Dr. Rajesh Kelkar[3]

1 Assistant Professor, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
2 Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
3 Vocal Dept. Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

शोध सार

वैश्वीकरण, दुनिया भर में लोगों, कंपनियों, सरकारों और संस्कृति के बीच बातचीत, एकीकरण और लेनदेन की प्रक्रिया है। परिवहन, संचार और टैकनोलजी में प्रगति के कारण 18 वीं सदी के बाद से वैश्वीकरण में तेजी आई। वैश्वीकरण की वजह से कला एवं संस्कृति में भी परिवर्तन आना शुरू हो गया। भारत भी इस वैश्वीकरण से किसी भी संदर्भ में अछूता नहीं रहा। भारतीय संगीत की सबसे पुरानी और समृद्ध परंपरा ने सामाजिक वर्गों और भौगोलिक सीमाओं को तोड़ कर दुनियां के सभी देशों में पहुचने लगा। भारतीय संगीत एक 'शास्त्रीय' परंपरा है, जिसमें एक प्राचीन और अत्यधिक विकसित सैद्धांतिक आधार है, लेकिन इसमें कई लोक और लोकप्रिय शैलियों का महत्वपूर्ण संबंध भी हैं। वैश्वीकरण के इस बदलते रुख में पश्चिमी संगीत एवं भारतीय संगीत का आदान प्रदान हुआ, जिसकी वजह से भारतीय कला और कलाकारों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त होना शुरू हुआ। इस शोध लेख का उद्देश्य शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में वैश्वीकरण को समझना और वैश्वीकरण की नई नैतिकता और मूल्यों के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत में शामिल अभूतपूर्व परिवर्तनों की खोज करके उसका विश्लेषण करना है। वैश्वीकरण के कारण वर्तमान भारतीय शास्त्रीय संगीत के मुख्य घटकों जेसे की कला, कलाकार, कला की प्रस्तुति एवं शिक्षा पद्धति में आए हुए बदलाव को समझाने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्दः वैश्वीकरण, भारतीय शास्त्रीय संगीत, कला और शिक्षा।

भूमिका

संगीत एक सार्वभौमिक भाषा है। प्राचीन समय से संगीत भारतीय सांस्कृति का एक हिस्सा रहा है। यह तर्क दिया जा सकता है कि संगीत की तुलना में दुनिया में अधिक विश्वव्यापी कुछ भी नहीं है। समय की शुरुआत से लेकर संगीत ने लोगों को एवं संस्कृति को साथ में जोड़ने का महत्व का काम किया है। सभी प्रकार के संगीत का आदान–प्रदान वैश्वीकरण के कारण है जो एक बहुत ही पुरानी घटना है लेकिन आज यह व्यापक रूप से स्पष्ट हुआ है। आज संगीत न केवल एक कला है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं उद्योग में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। भारतीय संगीत का वैश्वीकरण निश्चित रूप से आपसी अंतर्राष्ट्रीयता समझ और संचार को नेटवर्किंग के माध्यम से बढ़ाता है। संगीत हमेशा समाज या सामाजिक गतिविधियों से जुड़ा रहता है। संगीत प्रणाली का अविष्कार विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों के संदर्भ में व्यक्तियों की बातचीत से विकसित किया गया है। सामान्य रूप से सामाजिक जीवन की सबसे सहज गतिविधियां संगीत विशेषताओं के बिना नहीं हो सकती। समाज की बदलती वास्तविकताओं के साथ संगीत में परिवर्तन होता रहता है। इसने समाज की जरूरत के साथ कई चीजों को स्वीकार किया है और कई चीजों को बाहर रखा है। समय और स्थितियों के साथ संगीत के विकास में परिवर्तन होता रहता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति के बाद इसमें हुए परिवर्तन स्पष्ट रुप से सामाने दिखाई देते हैं। विकास एवं परिवर्तन की प्रक्रिया के माध्यम से भारतीय

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

शास्त्रीय संगीत ने कई विशेषताओं को समायोजित किया है जिन्होंने अपनी पहचान और स्थान को पूरी तरह से बदल दिया है। यह क्रमबद्ध विकास की प्रक्रिया दार्शनिक धार्मिक संगीत से लेकर दरबार तक, दरबार से लेकर समाज तक अविरत समय से चली आ रही है लेकिन समय के इन सभी चरणों में अनुकूलन और अस्वीकृति के साथ संगीत ने हमेशा अपनी बेदागता या शास्त्र शुद्धता को बनाए रखने के लिए संघर्ष किया है।

वैश्वीकरण का समाज, संस्कृति एवं कला पर असर

बीसवीं सदी के अंत में वैश्वीकरण लगभग हर चीज के लिए एक बहुत ही नई और जटिल परिभाषा ले के आया है। चाहे वह राजनीति हो, अर्थव्यवस्था हो, संस्कृति हो, संगीत हो या समाज हो। अधिक तौर पर संचार–व्यवस्था और बातचीत सरल हो गई है। योगेंद्र सिंह जी ने अपनी पुस्तक "Culture change in India: identity and globalization-in the modern world" में समझाया है कि सीमाओं के पार पूंजी, वस्तुएं और सेवाओं का मुक्त हस्तांतरण से पूरी दुनिया 'वैश्विक गांव' में रूपांतरित हो गई है। इस बदलाव से जीवन के अन्य पहलू जैसे कि कला, संस्कृति और संगीत में अभूतपूर्व बद्लाव आया है। तकनीकी अग्रिम और वैश्वीकरण की इस आंधी को भारतीय संस्कृति और समाज की बहुत पुरानी परंपरा के लिए खतरा माना जाता था।[1] भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए वैश्वीकरण की अवधारणा थोड़ी घृणित थी क्योंकि यह परंपरा के विपरीत है। आजादी के बाद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत को देखने के लिए बहुत सारे नए आयाम आए। अंग्रेजों के शासनकाल के बाद भारतीय शास्त्रीय संगीत दरबारों तक सीमित हो जाने के कारण कलाकारों की स्थिति बिगड़ने लगी और संगीत सिर्फ मनोरंजन का साधन बन गया। कलाकारों को बाजार की ताकतों के सामने उजागर होना पड़ा। धीरे–धीरे संगीत में वैश्वीकरण आने के साथ संगीत एक अलग मोड़ पर जा पहुंचा। समाज के आधुनिक रुझानों के साथ कलाकार को इस उभरती आर्थिक परिस्थिति में प्रतिस्पर्धी होना पड़ा। संगीत के इस बदलते आयाम एवं पारंपरिक संगीत की स्वीकृति के साथ सीखने, सिखाने में और प्रदर्शन में कई नए दृष्टिकोण शामिल करने पड़े। इसके फायदे और त्रुटिया दोनों हैं लेकिन यह कहा जा सकता है कि संगीत की दुनिया एक बहुत ही नये आकार और पहचान के साथ सामने आई। वैश्वीकरण के साथ संगीत के प्रति कलाकार और दर्शकों के दृष्टिकोण ने अलग–अलग दिशा ली।

वैश्विकरण में संगीत का स्तर

संगीत में वैश्वीकरण होने के कारण संगीतकारों ने अपने संगीत और कला के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण से विचार किया। वे चुनौतियों से प्यार करने लगे और सीमाओं के पार पहुंचने की इच्छा रखने लगे। भारतीय संगीत जो शास्त्रीय एवं निश्चित जनसमुदाय तक सीमित था, वह आसानी से सीमाओं को पार कर दुनिया के लगभग हर कोने में पहुंच गया है। कलाकारों के अथक परिश्रम के कारण भारतीय संगीत को विश्व संगीत मंचों में प्रशंसा और पहचान मिली। इसके साथ–साथ भारतीय संगीत ने कई पश्चिमी संगीत के घटकों को स्वीकार किया और भारतीय संगीत भी पश्चिमी संगीत का हिस्सा बन गया। भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों, तालों और कई अन्य रूपों ने कई रॉक कलाकारों एवं रॉक समूहों को प्रभावित करना शुरू कर दिया। पंडित रवि शंकर और उस्ताद जाकिर हुसैन जैसे कलाकारों ने भारतीय संगीत को विश्व मंच पर ले जाकर दुनिया भर के कलाकारों एवं श्रोतागण को प्रभावी ढंग से प्रभावित किया। वैश्विक स्तर पर जितनी संगीत की अलग अलग विधाएं हैं जैसे की जेज़, ब्लूस, पॉप, ऑपेरा, रॉक इत्यादि सभी विधाओं में भारतीय संगीत का अपना निजी अस्तित्व कायम हुआ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

एवं विविध भारतीय वाद्यों का प्रयोग होना शुरू हुआ। जैसा कि गेरी फैरेल ने अपनी पुस्तक 'इंडियन म्यूजिक एंड द वेस्ट' में बताया है– तबला का प्रयोग जैज, पॉप और रॉक में सुनाई देता है, या तो वो जीवंत प्रसारण के रूप में या उसका सेम्पल्ड साउंड का प्रयोग किया जाता है, और सितार का भी उपयोग कभी–कभी रॉक में किया जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ जैज और रॉक का मिश्रण होने से भारतीय और पश्चिमी संगीतकारों के बीच सहयोग बढ़ने लगा। भारतीय संगीतकार जैसे की वायलिन वादक एल शंकर और तबला नवाज़ जाकिर हुसैन जैसे कुछ भारतीय कलाकार फ्यूजन संगीत में केंद्रीय हस्ती बन गए हैं।[2] युवा पीढ़ी के कलाकारों में अनुष्का शंकर, सलिल भट्ट, निलाद्री कुमार, मीता पंडित जैसे कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं विश्व संगीत के मिश्रण से संगीत के नए आयाम प्रस्थापित किए और संगीत को नया मोड़ दिया। विश्व के विभिन्न स्थानों पर भारतीय संगीत समारोह का आयोजन होने लगा। कलाकारों ने भारत से विश्व के विभिन्न स्थानों की यात्रा की और दुनियाभर में पहचान पाने के लिए शुरू किया। कला के पुराने दर्शनशास्त्र के विचारों में परिवर्तन लाकर कला के नए दर्शनशास्त्र के विचारों को लागू करना पड़ा। "कला के प्रचार–प्रसार के लिए कला" धीरे–धीरे "जीवन जीने के लिए कला" के सिद्धांत की ओर मुड़ गया, यानि पूंजीवाद के लिए, क्योंकि पूंजीवाद वैश्वीकरण का मुख्य घटक है। कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति के नए अंग प्रस्थापित किए जो पुरानी प्रस्तुति की पद्धति से अलग थे। कलकारों ने परंपरागत प्रस्तुति की पद्धति में बदलाव लाकर श्रोतागण को क्या अच्छा लगता है उस पर विचार करके अपनी प्रस्तुति का आंकलन किया और प्रस्तुति के नए प्रकारों को अपनाया। जिससे भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार हुआ और संगीत जनमानस के लिए लोकप्रिय हुआ। जनमानस भी संगीत का आनंद लेने लगे और कलाकार की लोकप्रियता बढ़ने लगी तथा कलाकार की दृष्टि से यह काफी स्पष्ट हुआ कि जिस समाज में वे रहते हैं वहां की बढ़ती आर्थिक स्थिति में जीवन स्तर निभाने के लिए उसे सहजता प्राप्त होने लगी।

वैश्वीकरण के कारण कलाकारों में बदलाव

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैश्वीकरण के अनुसार बदलते सांगीतिक माहौल में कलाकार को सिर्फ अपनी कला और प्रस्तुति के बारे में विचार न करते हुए अन्य सिद्धांतो को जानना अत्यंत आवश्यक है। वैश्वीकरण के इस स्पर्धा के माहौल में स्थिति को बनाए रखने के लिए जनसंपर्क महत्वपूर्ण है। बहुत से कलाकार अपने आपको विश्वस्तर पर प्रदर्शित करने में सफल हुए है। इसका मतलब यह नहीं है कि कलाकार की प्रतिभा पर कुछ आशंका है लेकिन इस वाणिज्यिक दुनिया में अपना स्थान बनाए रखने के लिए कलाकार को सॉफ्ट स्किल्स को जानना अत्यंत महत्व का हो गया है और कलाकार को सम्पूर्ण तरीके से तैयार होना आवश्यक है। यह बाजार में किसी वस्तु को बेचने और खरीदने जैसा है। किसी भी क्षेत्र में अस्तित्व बनाए रखने के लिए विज्ञापन की जरूरत है, उसी प्रकार संगीत के क्षेत्र में भी एक कलाकार के अस्तित्व के लिए विज्ञापन बहुत जरूरी हो गया है। आज के लगभग हर कलाकार के पास अपनी संगीत प्रोफ़ाइल, ऑडियो/वीडियो क्लिपिंग, संपर्क विवरण आदि के साथ एक आधिकारिक वेबसाइट है। इससे यह सामने आता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की पुरानी और महत्वपूर्ण विशेषताओं में कई परिवर्तन आये हैं जिससे कलाकार की प्रतिष्ठा में बढ़ौतरी हुई है और भारतीय संगीत का अलग स्वरूप सामने आया है।[3]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

वैश्वीकरण के कारण प्रस्तुतीकरण में बदलाव

जैसे–जैसे भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार होने लगा और यह कला जनमानस तक पहुचने लगी वैसे–वैसे प्रदर्शन के स्वरूप एवं ढ़ाचे में बहुत सारे बदलाव करने पड़े। यह बदलाव लोगों की रुचि एवं आयोजकों की मांग के आधार पर निर्भर रहते हैं। न तो लोगों के पास समय, रुचि है और न ही सौंदर्यवादी मूल्यों का पता लगाने और दार्शनिक तत्व को संगीत से जोड़ने की समझ है। जनता को आकर्षित करने के लिए आयोजक को एक कार्यक्रम के समय की अवधि में कम–से–कम तीन से चार प्रदर्शन का पैकेज बनाना होता है। इसी वजह से कलाकार को अपनी प्रस्तुति के लिए एक से डेढ़ घंटे तक का ही समय मिल पाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को समय की कम अवधि में भावनात्मक या सौंदर्य पहलू के साथ रागों की तकनीकी को बनाए रखते हुए अपना प्रदर्शन आकर्षक एवं मनोरंजक बनाना यह वास्तव में कलाकार के लिए एक चुनौती है। कलाकार को अपनी प्रस्तुति में ऐसे पहलुओं का समावेश करना पड़ता है जो कम–से–कम समय में गाया या बजाया जाए। जैसे कि कोइ भी राग को अगर बजाना या गाना हो तो उसमें ज्याद आलापी न करते हुए या सिर्फ राग का स्वरूप प्रस्तुत करके तुरंत हमें बंदिश की शुरुआत करनी पड़ती है। बड़ा खयाल को भी छोटा खयाल की तुलना में कम समय में प्रस्तुत किया जाता है और संगीत के दूसरे प्रकार जैसे की ठुमरी, कजरी, चैती, भजन आदि प्रस्तुत करने के लिए शायद ही समय रहता है। इसलिए कलाकार ऐसे रागों का चयन करता है जो समझने में और सुनने में सहज हो एवं उसकी प्रस्तुति में भी सहजता हो। इस पद्धति का प्रस्तुतीकरण संगीत की धरोहर को संभाले रखने के लिए हानिकारक है लेकिन यह बदलते संगीत की दुनिया के फायदों में से एक माना जा सकता है। इसके अलावा भी कलाकार को ध्वनि तकनीकी का योग्य ज्ञान होना अत्यंत जरूरी है क्योंकि प्रस्तुति का पूरा दारोमदार ध्वनि तकनीकी पर ही निर्भर होता है। इस ठाट–बाट की दुनिया में हमारा व्यवहार, कपड़े, हाव–भाव इत्यादि भी मायन रखता है। इन सब बातों का अगर योग्य ज्ञान हो तो कलाकार अगर थोड़ा बहुत कम बजाने या गाने वाला हो फिर भी उसकी प्रस्तुति लोकरंजक हो सकती है।

वैश्वीकरण से संगीत शिक्षा के बदलते आयाम

वैश्वीकरण के बदलते इस सांगीतिक माहौल में वही शास्त्रीय संगीत या राग संगीत तथाकथित संगीत परिवारों की स्वायत्तत थी, जो आम आदमी के पास बहुत सहजता के साथ पहुंचने लगा। संगीत अब किसी अल्पक जनसमुदाय की संपत्ति न रही। यह बदलते संगीत की दुनिया के फायदों में से एक माना जा सकता है। कई संगीतकार जो किसी भी सांगीतिक परिवार से न होकर भी संगीत की दुनिया में महान काम कर रहे हैं। इससे संगीत जगत में जो रूढ़िचुस्तता थी वो कम होने लगी और संगीत के प्रचार–प्रसार में बढ़ौतरी हुई। इससे संगीत की लोकप्रियता और संगीत शिक्षा का स्तर भी बढ़ने लगा और सामान्य लोग जो संगीत में रुचि रखते थे वो योग्यरूप से संगीत सिखने में रुचि लेने लगे। शिक्षक या गुरु, संगीत सीखने के उद्देश्य से आए हुए छात्रों को उनके योग्यता के अनुसार सीखाने की व्यवस्था करने लगे। इससे पुरानी रुढ़ि चुस्तवादी गुरु–शिष्य के संबंधों का सार धीरे–धीरे बदलने लगा। शायद ही कोई छात्र अब किसी विशेष गुरु का 'गंडाबंद शागिर्द' रहता है। अब गुरु और शिष्य का दृष्टिकोण बदल गया है और गुरु और शिष्य के व्यवहार में भी बदलाव आने लगा है। भारतीय संगीत के गुरु–शिष्य परंपरा ने सप्ताहांत कक्षाओं या अल्पकालिक क्रैश पाठ्यक्रमों का रूप ले लिया है। शिष्य सप्ताह में एक बार या उससे भी कम बार गुरु से मिलता है। हाल के वर्षों में संगीत कक्षाएं इंटरनेट,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

वीडियो चैट, स्काइप आदि के माध्यम से आयोजित की जाती हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ये एक महान अविष्कार है। इससे यह फायदा हुआ है कि भारतीय संगीत देश के कोने–कोने में पहुच रहा है। इसमें सीखने और सीखाने की प्रक्रिया ज्यादातर विभिन्न इंटरनेट साइटों में स्काइप, यूट्यूब जैसे माध्यमों पर आधारित रहती है। इस प्रक्रिया में गुरु के विचारों को योग्य रूप से समझना या संगीत के सिद्धांत को मन में बिठाना संभव नहीं है जो संगीत का हार्द होता है और वही गुरु की इच्छा होती है। इसलिए कहा जाता है कि यह विद्या गुरुमुखी और गुरु के सामने बैठ कर सीखने की विद्या है। संगीत के लिखित दस्तावेजों के अविष्कार ने भी इस युग में संगीत सीखने की प्रक्रिया में अंतर लाया है। संगीत सीखने का दूसरा पक्ष पुस्तकीय शिक्षा के संदर्भ में आता है जिसमें बंदिशे, गते और उसके आलाप विस्तार के नोटेशन किताबों और इंटरनेट साइटो पर आसानी से उपलब्ध हैं और उसके सहारे संगीत की शिक्षा प्राप्त करना। भारतीय संगीत गुरुमुखी होने के कारण इसे पुस्तकों से नहीं सीखा जा सकता है। कोई भी सैद्धांतिक ज्ञान पुस्तकों में से इकट्ठा कर सकता है, लेकिन गुरु के सामने बैठकर ली हुई शिक्षा का स्तर अलग होता है। पुस्तकीय ज्ञान और गुरु के पास से प्राप्त तालिम में बहुत अंतर है इससे ज्ञान की गुणवत्ता में भी काफी अंतर आता है। इस पीढ़ी में कलाकार को तालिम से अधिक संगीत की जानकारी है, जो कला के विकास के लिए घातक है। इसमें कोई शक नहीं कि पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे और पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी का योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में अवर्णनीय है। पुराने घरानों के पुराने बंदिश और बहुत ही खास चीजें जो मुट्ठी भर संगीतकारों की स्वायत्तता थी, उन्हें सार्वजनिक कर दिया, नहीं तो वो सब बंदिशे समय के साथ लुप्त हो जाती। उनके अथक परिश्रम की वजह से ही भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रवेश शैक्षणिक संस्था में हुआ तथा संगीत विषय को भी दूसरे विषयों की तरह मान्यता प्राप्त हुई और संगीत का स्तर समाज में बढ़ने लगा। कुछ भारतीय संगीत की संस्थान ऐसे हैं जिन्होंने भारत के बाहर भी अपनी शाखाएं खोली हैं। जैसे की अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना १९५६ में कोलकाता (कलकत्ता) में हुई थी। इसी संस्था द्वारा १९६७ में बर्कले, कैलिफोर्निया में अपनी पहली अमेरिकी शाखा खोली । अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक भारत के बाहर एकमात्र ऐसी संस्था है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत सिखाती है। भारतीय संगीत एवं पश्चिमी संगीत का मिलाप अध्ययन का एक दिलचस्प क्षेत्र बन गया है।[4]

निष्कर्ष

इसमें कोई शक नहीं कि हाल के वर्षों में भारतीय संगीत का पूरी दुनिया में जबरदस्त वैश्विक प्रभाव पड़ा है। भारतीय संगीत अनेक विभिन्न संगीत शैलियों का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है और अन्य देश के विभिन्न संगीत में भारतीय संगीत शामिल है। इतने बड़े पैमाने पर भारतीय संगीत का यह वैश्वीकरण हमारे संगीतकारों के व्यापक प्रयासों के कारण है जो पूरे विश्व को भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा से अवगत कराते हैं। यह वैश्वीकरण हमारी अपनी संगीत संस्कृति एवं कलाकारों को समृद्ध बनाने में सहायक होता है। हम चाहते हैं कि संगीत का ऐसा आदान–प्रदान आने वाले वर्षों में भी जारी रहे और भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार देश के कोने–कोने में बढ़ता जाए। हम इसे पसंद करे या न करे, हम परिवर्तन की अपरिहार्य वास्तविकता से इंकार नहीं कर सकते। "परिवर्तन ही परम सत्य है"। किसी भी अन्य कला की तरह भारतीय शास्त्रीय संगीत को भी बदलते समय के साथ विकसित होना होगा। यही हमारा कर्तव्य है कि भारतीय संगीत की गरिमा को ठेस न पहुंचाते हुए इस संगीत को वैश्विक स्तर पर मान–सन्मान प्राप्त करवाएं, यही हमारा संकल्प होना चाहिए।

© The Author(s) 2021

संदर्भ

1 Singh, Yogendra. Culture change in India. identity and globalization-in the modern world. Pg No- 35
2 Farell, Gerry. Indian Music and the west. Pg No - 77
3 Vedbala, Samidha. Indian Classical Music in a Globalized World. February 2016 -Sangeet Galaxy Vol.5, Pg No – 3-9
4 Rohit . The Globalisation of Indian Music: An Overview. 8-10 September 2014-International Conference on Social Sciences and Humanities . Pg No 336

Singh, Y. (2012). Culture change in India, identity and globalization-in the modern world. Jaipur: Rawat ublications.
Farell, G. (1997). Indian Music and the west. oxford university press, UK.
Vedbala, S.(February 2016.). Indian Classical Music in a Globalized World. Retrieved on Jan-2016 from http://www.researchgate.net/publication/292137392
Rohit. (08-10 Sept2014). The Globalisation of Indian Music: An OverviewTurkey. Proceedings of SOCIOINT 14 – International Conference on Social Sciences and Humanities